[redacted]

No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 9, 28/31 मई 2015 तदनुसार 17 ज्येष्ठ सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

संसार भगवान की कीर्ति

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शतं वपुः।
अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कमिन्द्र चरतो वितर्तुरम्।।

-ऋ० १।१०२।२

शब्दार्थ-**अस्य** = इस भगवान् के **श्रवः** = यश को सप्त+नद्यः = सात नदियां **बिभ्रति** = धारण कर रही हैं, **द्यावाक्षामा** = द्यौ, पृथिवी और **पृथिवी** = अन्तरिक्ष **दर्शतम्** = देखने योग्य **वपुः** = निर्माण **सामर्थ्य** = शरीर को **बिभ्रति** = धारण कर रहे हैं। **हे इन्द्र** = अनन्त बल-पराक्रम वाले भगवान्! **सूर्याचन्द्रमसा** = सूर्य और चन्द्र **अस्मे** = हमें **अभिचक्षे** = दिखाने तथा **श्रद्धे** = तुझ पर श्रद्धा कराने के लिए **कम्** = सुखपूर्वक **वितर्तुरम्** = परस्पर विरुद्ध मार्ग में **चरतः** = चल रहे हैं।

व्याख्या-अपने उद्गम-स्थान से निकल कर कलकल ध्वनि करती हुई नदियां भगवान् का यशोगान कर रही हैं। उसका रूप देखना चाहते हो तो यह विशाल द्यौ, विस्तृत अन्तरिक्ष और महती मही उसका शरीर ही है, जैसा कि अथर्ववेद में कहा है-

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्। दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः। अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन्। दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। -अथर्व० १०।७।३२-३४

भूमि जिसका पादतल है और अन्तरिक्ष पेट। जिसने द्यौ को सिर बनाया, उस सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म को नमस्कार! सूर्य और प्रतिदिन नूतन प्रतीत होने वाला चन्द्रमा जिसकी आंख हैं और अग्नि को जिसने मुख बनाया है, उस ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार! वायु जिसके प्राण-अपान हैं, किरणें जिसकी आंखें है, दिशाओं को जिसने प्रज्ञानी-ज्ञान कराने वाली या कान बनाया है उस सर्वोत्तम ब्रह्म को नमस्कार।

रूपक अलङ्कार से संसार के पदार्थों को भगवान् का शरीर-निरूपण किया है।

इस विशाल, अनन्त-अपार संसार को देखकर किस बुद्धिमान् का भगवान् के आगे सिर नहीं झुकेगा। सूर्य पूर्व से उदय होता है, चन्द्रमा का उदय पश्चिम से प्रारम्भ होता है, दोनों विपरीत दिशा से उदय होकर भी प्राणियों के सुख के हेतु बनते हैं। परस्पर विरुद्ध दिशा में चलकर भी ये दोनों मनुष्य का हित-साधन करते हैं। क्या ये अपने-आप ऐसा करते हैं? कदापि नहीं। ये किसी के आदेश में बंधे हुए ऐसा कर रहे हैं और इस भांति उसकी सत्ता का पता दे रहे हैं-'अस्मे...श्रद्धे कमिन्द्र चरतो वितर्तुरम्' ये सूर्य-चन्द्र हमें उसके दर्शनीय तेज का दर्शन कराने के लिए और उस पर श्रद्धा कराने के लिए सुखपूर्वक परस्पर विरुद्ध चलते हैं। सूर्य, चन्द्र, विशाल संसार भी भगवान् पर यदि श्रद्धा नहीं करा सकते तो कौन कराएगा ? कार्य कर्त्ता की सूचना देता है। यह अद्भुत् सुन्दर संसार उस अपार की महिमा का सार हैं।

भगवान् का यश बहुत बड़ा है, सबसे बड़ा है-**उत्ते शतान्मघवन्नुच्च भूयस उत्सहस्राद्रिरिचे कृष्टिषु श्रवः** [ऋ० १।१०२।७] प्रभो! प्रजाओं में तेरा यश सैंकड़ों से बड़ा है, हज़ारों से अधिक है और बड़ों से भी बड़ा है। यह समूचा संसार विकार के द्वारा, परिवर्तन के द्वारा, वृद्धि-ह्रास के द्वारा, उत्पत्ति-विनाश के द्वारा, इशारा कर रहा है कि यह कार्य है। कार्यकर्त्ता की सूचना देता है। जैसी सुन्दर रचना होगी, वैसी कर्त्ता की योग्यता समझी जाती है। संसार के पदार्थों पर विचार किया जाए, तो ये चक्कर में डाल देते हैं। पृथिवी को ही देखा जाए क्या कोई बड़े-से-बड़ा वैज्ञानिक कहने का साहस कर सकता है कि उसने पृथिवी का सब कुछ जान लिया है ? मिट्टी का ढेला जल में डालो, वह जल में घुल जाएगा। यह नैसर्गिक नियम है। पृथिवी के चारों ओर जल है और उससे तिगुना, पृथिवी पर और इसके भीतर भी जल है, किन्तु पृथिवी नहीं घुलती। अग्नि जलाता है, किन्तु शरीर के भीतर का अग्नि जिलाता है। एक पत्ते को देखिए, किस प्रकार की सूक्ष्म रचना है। मानव-तन कितना अद्भुत है। कोई सबसे बड़ा वैज्ञानिक इस शरीर का पूर्ण रहस्य जान पाया। संसार के पदार्थ एक से एक बढ़कर विलक्षण और अद्भुत हैं। इनका बनाने वाला कितनी अद्भुत बुद्धि का धनी होगा, इसकी तो मनुष्य पूरी कल्पना भी नहीं कर सकता, यहां आकर वह कुण्ठित हो जाता है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

धर्म का वैज्ञानिक स्वरूप

-ले० डा. रामावतार अग्रवाल, चौबे कॉलोनी रायपुर

धर्म एक ऐसी अव्यक्त ईश्वरीय सत्ता है, जो प्रकृति तथा जीवन में संतुलन बनाती है। धर्म ईश्वरीय सत्ता होने से कालातीत है। काल व युग उससे उत्पन्न होते हैं, वह उनसे नहीं। वह किसी पीर-पैगम्बर और अवतारी पुरुष से प्रसूत सत्ता भी नहीं है।

विज्ञान और धर्म आत्मा की अदृश्य शक्तियां हैं। विज्ञान से सत्य नियम उदय होकर, धर्म द्वारा धारण किये जाते हैं। यदि ज्ञान पथ प्रशस्त करता है, तो धर्म उस पर चलाता है। विज्ञान तब तक अपंग है, जब तक वह क्रिया में परिवर्तित नहीं होता। धर्म शब्द धृ-धातु से बना है, जिसका अर्थ धारण करना है। फलत: क्या धारण करना, क्या नहीं करना, यही धर्म का काम है। क्या भद्र है और क्या अभद्र? यह धर्म से ही ज्ञात होता है। इसके परिणाम स्वरूप विज्ञान की कीमत कोरे ज्ञान-विज्ञान में नहीं, वरन् उसके क्रियान्वयन में है। क्रिया या कर्म आत्मा की प्रकृति है तो विज्ञान उसका प्रकाश। इस प्रकार दोनों के समन्वित स्वरूप का नाम ही धर्म है। धर्म का कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है। धर्म, आत्म-सुख की स्वाभाविक आकांक्षा है। सुख की कामना सबमें समान है। अत: जो गुण समानता का पोषण करते हैं, वे सब धर्म हैं। सब सुखी हों। सबका समान पोषण हो। यही धर्म की कसौटी है।

इस प्रकार धर्म का भिन्न-भिन्न मत-मतान्तरों, सम्प्रदायों-मजहबों और रिलीजनों से कोई सम्बन्ध नहीं है। धर्म, काल निरपेक्ष है। वह प्रत्येक युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से ग्राह्य है, परन्तु मत-विश्वास व आस्थाएं व्यक्तियों से सम्बन्धित होने से काल व स्थिति सापेक्ष हैं। अत: वे सदैव प्रभावी नहीं रह सकते। यदि वर्तमान मत या तथाकथित धर्म, मनुष्य को सुख देते, तो जगत् दु:खों के फंदे में नहीं फंसता।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि काल, लोक और सृष्टि ईश्वर की उस शक्ति अथवा उन ऋत नियमों द्वारा धारण किए गए हैं, जो श्रम-तप या चेतना से उत्पन्न होते हैं-

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिता। -अथर्ववेद 12.5.1

अत: विश्व जीवन को धारण करने वाली शक्ति धर्म है। इसके फलस्वरूप धर्म उन सत्य नियमों का नाम है, जो जीवन को धारण करते हैं।

वस्तुत: धर्म ऐसी आन्तरिक शक्ति है जो ऋत राईट या सत्य सत्ता से स्रवित होती है। वेदों के अनुसार व्यापक सत्यों, ऋत नियमों, तप, यज्ञ और ज्ञान-विज्ञान के जो नियम हैं उन्हीं ने जीवनदायिनी जगत् जननी भूमि माता को धारण किया हुआ है-

सत्येनोत्तभिता भूमि:।
सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ: पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी न: कृणोतु।।

-अथर्ववेद 12.1.1

ऋग्वेद के अनुवाद धर्म में जो सत्याएं व्याप्त हैं, उन्हीं की धारणा से जीवन उदय हुआ है।

-ऋग्वेद 10.56.3

अत: सत् में जो असत् स्थित है, वही अधर्म है। धर्म या सत्य, अमृत और अधर्म या असत्य, मृत्युकारक हैं। सृष्टि का जो अखिल विज्ञान है, वही सविता देव का स्वधर्म है। वह अपनी आभाओं के साथ प्रकृति में प्रविष्ट होकर ऋत नियमों या प्रकृति रूपी भुजाओं से सम्पूर्ण सृष्टि चक्र का संचालन करता है-

देव: कृणुते स्वाय धर्मणे।

-ऋग्वेद 4.53.3

सत्य में धर्म व्याप्त हैं। अत: सत्य धर्म की कीमत कभी कम नहीं हो सकती। ऋग्वेद के अनुसार व्यक्ति को सुपथगामी रहते हुए धर्म या शाश्वत सत्यों तथा अन्य गुणों को प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि धर्म और सत्य ही जीवन के सार हैं-

सुवितो धर्म प्रथमानु सत्या सुवितो देवान्त्सुवितोऽनु पत्म।।

-ऋग्वेद 10.56.3

सत्य और धर्म परस्पर पूरक हैं। सत्य ही धर्म या धर्म ही सत्य है। वेदों में सत्य व धर्म, कर्त्तव्य-कर्मों के रूप में भी प्रयुक्त हुए हैं-

यदेकस्याधि धर्मणि तस्यावय-जनमसि। -यजुर्वेद 20.17

धर्म ईश्वर की वह शक्ति है जो ब्रह्माण्ड को आकर्षण और प्रक्षेपण बल द्वारा धारण करती है। वह वनस्पति की हरियाली, सूर्य की गर्मी, चन्द्रमा की चांदनी, जल की शीतलता, अग्नि की ज्वलन्तशीलता, वायु की प्राण शक्ति तथा पृथिवी की गंध-सुगंध द्वारा अभिव्यक्त हो रही है। वस्तुत: पदार्थों के भिन्न-भिन्न गुण-धर्म ही, उनकी पहचान हैं। गुण धर्म के द्वारा ही सोना, चांदी, हीरे, मोती लोहे व तांबे की परख की गई है। आम, अनार, अंगूर आदि फल अपनी-अपनी सुंदरता, सुगंध और स्वाद के द्वारा विश्वविख्यात हुए हैं। अत: जैसे पत्र-पुष्प-फल, पशु-पक्षी स्वधर्म के कारण चिह्नित हुए हैं, वैसे ही मानव अपने धर्म मानवता से ही मानव है। दानवता से दानव है।

इस प्रकार विविध पदार्थों और जीवों के गुणों के धारण करने वाली शक्ति ही धर्म है। धर्म शक्ति किसी पीर-पैगम्बर, संत-महंत तथा देवी-देवताओं के द्वारा निर्मित शक्ति नहीं है। वह सर्वत्र प्रवाहित रहने वाली धर्मशक्ति है। अत: मानव धर्म किसी किताब में कैद रहने वाला धर्म नहीं है। वह निरंतर बहने वाली शक्ति धारा है। यही शक्ति सनातन है। यही धर्म पुराना, पहले का अथवा सृष्टि पूर्व का धर्म है। इसी धर्म को वेदों में पुरातन धर्म कहा गया है-

धर्म पुराणम्।-अथर्ववेद 18.3.1

ऋग्वेद 8.30.3 के अनुसार सनातन धर्म ही पितृ या आदिपथ है, जिस पर चलकर पूर्वजों ने सुख प्राप्त किया था। अत: सुख-शांति के लिए हमें भी पितृपथ का अनुकरण करना चाहिए। हमें सुखदायक मानवीय मार्ग से कभी भी दूर नहीं जाना चाहिए।

ते नस्त्राध्वं ते ऽवत ते उ नो अधि वोचत।
मा न: पथ: पित्रयान्मानवादधि दूरं नैष्ट परावत:।।

-ऋग्वेद 8.30.3

उपर्युक्त मंत्र के अनुसार मनुष्य को उस धर्म का पालन करना चाहिए, जो शाश्वत है। शाश्वत धर्म का सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से न होकर, आत्मा से उत्पन्न होने वाली आत्मीयता या मानवता से है। मानवता के अभाव में मानव, अमानव व दानव है। वास्तव में मानवता या आत्मीयता ही व्यक्ति का सत्य धर्म है और जो धर्म सदैव व सर्वत्र रहने वाला है वही विज्ञान या तर्क सम्मत धर्म है।

वेदों के अनुसार भौतिक-अभौतिक सभी शक्तियां मिथुन रूपा हैं-

उताश्विनावभरद्यित्तसीदजहाद् द्वा मिथुना सरण्यू:।।

-ऋग्वेद 10.17.2

जैसे भौतिक शक्तियों के ऋण, धन या सकारात्मक-नकारात्मक दो ध्रुव या दो रूप हैं, वैसे ही आत्म शक्तियों के सत्य-असत्य, विद्या-अविद्या, त्याग-स्वार्थ, दान-भोग, प्रेम-घृणा, राग-द्वेष और कर्म, अकर्म या श्रम-अश्रम दो भिन्न स्वरूप हैं। उपर्युक्त शक्तियों के संतुलन से सुख और असंतुलन से दु:ख उत्पन्न होता है। दो विपरीत ध्रुवों वाली शक्तियों में संतुलन स्थापित करने वाली शक्ति संयम हैं। संयम को सशक्त बनाने वाली आत्मा की अन्य शक्ति धाराएं धैर्य, क्षमा, सहनशीलता, दया एवं निरपेक्षता अथवा अनासक्ति आदि हैं।

जैसे प्राकृतिक शक्तियों का संचालक या नियामक परमात्मा है, वैसे ही आत्मशक्तियों का नियन्ता आत्मा है। जैसे प्रकृति में आकर्षण और प्रक्षेपण दो बल काम कर रहे हैं, वैसे ही जीवन में आत्मीयता तथा अनात्मीयता प्रभावशील है। आत्मीयता प्रेम द्वारा अन्यों को आकर्षित करती है और अनात्मीयता घृणा-द्वेष द्वारा व्यक्ति को व्यक्ति से दूर फेंकती है।

अपनी ओर खींचना और दूर फेंकना, इन्हीं दो शक्तियों ने ब्रह्माण्डीय जीवन धारण किया हुआ है। जीवन धारण करने से दोनों विपरीत शक्तियां धर्म रूप हैं। यदि आकर्षण बल प्रकृति का धर्म है, तो प्रक्षेपण बल भी उसी का धर्म है। प्रतिकूल गुण धर्म होने के उपरांत भी प्रकृति में सब एक-दूसरे के मित्र हैं। कोई किसी का शत्रु नहीं है। विश्व में समस्त शक्तियां परस्पर सहयोग द्वारा सबका समान पोषण कर रही हैं। जैसे दो विपरीत शक्तियों के समन्वय से, ग्रहों की गति में संतुलन बना रहता है, वैसे ही मानवीय जीवन में आत्मीयता तथा अनात्मीयता अथवा प्रेम और घृणा अथवा आसक्ति-अनासक्ति या प्रवृत्ति-निवृत्ति के योग से ही समन्वय स्थापित हो सकता है।

(क्रमश:)

सम्पादकीय......

सदाचार से ही मनुष्य का उत्थान सम्भव

सदाचार भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। शास्त्रों में सदाचार की बड़ी महिमा गाई गई है। प्राय: सभी स्मृतियों, पुराणों और धर्म ग्रन्थों में सदाचार के अनेकों प्रकरण मिलते हैं। वेद तो आचार को बड़ा महत्त्व देता है। संसार के सभी धर्मग्रन्थ विश्वास अर्थात् ईमान को महत्त्व देते हैं परन्तु वेद ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें आचार का प्रथम स्थान है'' इसीलिए मानव जीवन में इसका बड़ा महत्त्व है। मनु महाराज ने आचार को परम धर्म कहा है-

आचार: परमो धर्म: श्रुत्युक्त: स्मार्त्त उव च।

अर्थात् श्रुति स्मृति में निर्दिष्ट आचार ही मुख्य धर्म है। वेद में आचार को भी यज्ञ कहा जाता है और यज्ञ को मुख्य धर्म बतलाया गया है। मनु महाराज ने कहा है कि सज्जन विद्वान् जिनका हृदय राग द्वेष से कभी कलुषित नहीं होता और जो हृदय से वेदासदि सम्मत जिस धर्म को मानते हैं वही वास्तव में धर्म है।

इसीलिए महाभारत में कहा है आचार: प्रभवो धर्म:। आचार शब्द के साथ कुछ उपसर्ग व अव्यय लग जाने से अनेकों शब्द वाञ्छनीय वा अवाञ्छनीय अर्थो वाले बन जाते हैं- जैसे सदाचार, शिष्टाचार, कदाचार, दुराचार, अनाचार, मिथ्याचार, भ्रष्टाचार इत्यादि। इनमें से प्रथम दो शब्द तो सदाचार व शिष्टाचार अच्छे ग्राह्य अर्थों में आते हैं और शेष त्याज्य अर्थों के द्योतक हैं। आचार शब्द का सामान्य अर्थ है- जो आचरण किया जाए। आचर्यत इति आचार: अर्थात् मनुष्य अपने जीवन के प्रति, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के प्रति जो आचरण प्रात: काल से लेकर शयन पर्यन्त करता है, वे सब आचार के अन्तर्गत आते हैं। यह अच्छे भी हो सकते है और बुरे भी। सामान्यत: आचार शब्द अच्छे शब्दों में ही आता है।

इसको ही शील व चरित्र भी कहा गया है। सदाचार शब्द का अर्थ शास्त्रों के अनुसार सज्जन, साधु सन्त दोषरहित पुरूषों का आचरण सदाचार कहलाता है-

सततं सज्जनानाम् य: आचार: स: सदाचार:

अर्थात् यूं कहिए कि शास्त्र सम्मत जिन आचरणों का पालन करने से आत्मा, मन और वाणी तथा शरीर को सुसंस्कृत कर सत् चित्त आनन्द स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति की ओर उन्मुख कर असत रूप जगत् के रागद्वेष कलह आदि असुर भावों से विमुक्त हो मानव अभ्युदय तथा शान्तिमय वातावरण का निर्माण करता है वे सकल [illegible] आचरण व व्यवहार सदाचार कहलाते हैं [illegible] विपरीत [illegible] आचार दुराचार, भ्रष्टाचार या अनाचार होते हैं।

महर्षि मनु सदाचार पालन के लाभों की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं कि सदाचार पालन करने से आयु तथा कान्ति की प्राप्ति होती है। [illegible] इस लोक तथा परलोक में कीर्ति तथा यश को प्राप्त करता है। इसके विपरीत सदाचार का पालन न करने से मानव निन्दनीय रोगी, दुःखी तथा अल्पायु हो जाता है। जीवन का एकमात्र उद्देश्य [illegible] लक्ष्य [illegible] की प्राप्ति है [illegible] पवित्र मन और [illegible] [illegible] अत: शास्त्रों में भी कहा गया है कि [illegible] का मूल हृदय की पवित्रता है और आचार की शुद्धता के बिना [illegible] की पवित्रता सम्भव नहीं है। अत: शास्त्र कहते हैं कि [illegible] व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र की उन्नति का स्रोत हैं। जब राष्ट्र व समाज में सदाचार का [illegible] दुराचार का [illegible] परिणाम [illegible] [illegible] कदाचार, [illegible] [illegible] सम्पूर्ण [illegible] तथा सारा समाज [illegible] [illegible], मिथ्याचार, [illegible] से ग्रसित [illegible] है।

इसके परिणामस्वरूप अशान्ति रागद्वेष की ज्वाला जल रही है। अधिकतर धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक संस्थाएं इस भयंकर रोग से पीड़ित हैं। अत: राष्ट्र की शान्ति भी उत्तरोतर भंग होती जा रही है। सद्भावना का अभाव है। कहीं भी स्थिरता या मर्यादा दिखाई नहीं देती। सर्वत्र स्वार्थ, पाखण्ड, दुराचार और भ्रष्टाचार का दृश्य दिखाई देता है। कभी हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था और इस देश में लोग चरित्र की शिक्षा लेने के लिए आते थे। परन्तु आज हमारा देश सब प्रकार की बुराईयों से ग्रसित है।

सदाचार के अभाव के कारण हमारे देश में इस तरह की बुराईयां फैल रही हैं। हमारे ऋषियों ने सदाचार को वृक्ष की उपमा देकर उसके महत्त्व को समझाया है कि सदाचार मानो एक वृक्ष है जिसकी जड़ धर्म है और धन इसकी शाखाएं हैं। काम इसके फल हैं। जिस पुरूष ने इस सदाचार रूपी वृक्ष का सेवन किया है, सदाचार का जीवन में पालन किया है वह पुण्यों का भोक्ता होता है।

सदाचार के इस निरूपण के पश्चात यह जानना भी आवश्यक हो गया है कि ऐसी कौन सी बाधाएं है जो हमें इस पवित्र मार्ग को अपनाने में रूकावटें बनकर आ खड़ी होती हैं और जिसके वशीभूत होकर मनुष्य अपने धर्मनिष्ठ मार्ग से गिर कर जहां अपना पतन करता है वहां देश, जाति, समाज और राष्ट्र को क्षति के गर्त में डूबो देता है। महाभारत के अनुसार काम, क्रोध, लोभ, मोह, असन्तोष, निर्दयता, अभिमान, ईर्ष्या, निन्दा आदि मनुष्यों में रहने वाले दोष सदा ही त्यागने चाहिए। यदि हम अपने देश, राष्ट्र और समाज को वर्तमान के दूषित वातावरण से मुक्त देखना चाहते हैं तो हमें ऋषियों के बताए हुए वेद स्मृति निर्दिष्ट सदाचार के नियमों का पालन करना होगा। सदाचार का पालन करना किसी मजहब या वर्ग विशेष के लिए नहीं है अपितु इसका पालन तो मानव मात्र के लिए है, चाहे वह किसी भी जाति व धर्म व वर्ग से सम्बन्धित क्यों न हो। सदाचार पालन ही वास्तव में एकमात्र धर्म है इसके अतिरिक्त और कोई धर्म नहीं है। अत: देश, राष्ट्र, समाज तथा स्वयं अपने हित के लिए सदाचार का पालन करना चाहिए।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

कात्यायनमुनि विद्यापीठ का शुभारम्भ

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम (आनन्दधाम आश्रम), गढ़ी, उधमपुर (जम्मू कश्मीर) के ट्रस्टियों की बैठक आश्रम के प्रधान श्री भारतभूषण आनन्द जी की अध्यक्षता में दिनांक 19 अप्रैल, 2015 को सम्पन्न हुई जिसमें सर्वसम्मति से आश्रम में 'कात्यायनमुनि विद्यापीठ' की स्थापना करने का निर्णय लिया गया। विद्यापीठ में व्याकरण, छन्द, छ: दर्शन, निरूक्त आदि वैदिक वांग्मय का अध्यापन कार्य नि:शुल्क कराया जाएगा। रोजड़ (गुजरात) में शिक्षा प्राप्त आचार्य सन्दीप आर्य जी ने अध्यापन कार्य नि:शुल्क करना स्वीकार किया। इसके लिए ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने उनका अत्याधिक हार्दिक आभार व्यक्त किया। यह भी निर्णय हुआ कि आचार्य जी सहित विद्यापीठ में होने वाले भोजन, आवास एवं पुस्तकों आदि का व्यय आश्रम वहन करेगा तथा आचार्य जी को आश्रम एवं विद्यापीठ [illegible] इच्छुक एवं दानदाता महानुभाव [illegible] वानप्रस्थाश्रम' का बैंक खाता [illegible] SBIN-2346, SBI Ghari.

[illegible] आर्य	महात्मा चैतन्यमुनि	भारतभूषण आनन्द
आचार्य	कुलपति	प्रधान
0946[illegible]1005	09418053092	09419107788

अवतारवाद क्या है ?

-ले० श्री सुमित टण्डन-लुधियाना

प्रश्न-अवतारवाद क्या है ?

उत्तर-जब जीवात्माएं पुनर्जन्म के अनुसार शरीर परिवर्तन करती हैं तो यह उनका अवतार लेना कहा जाता है।

प्रश्न-क्या ईश्वर अवतार लेता है ?

उत्तर-नहीं ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता।

प्रश्न-ईश्वर का अवतार क्यों नहीं होता ?

उत्तर-ईश्वर विराट और अनन्त है, वह सीमित होकर एक छोटे से शरीर में नहीं आ सकता।

प्रश्न-लेकिन ईश्वर तो सर्वशक्तिमान है वह तो कुछ भी कर सकता है, फिर अवतार क्यों नहीं ले सकता ?

उत्तर-सर्वशक्तिमान का अर्थ ये नहीं है कि कुछ भी कर जाना। ईश्वर वही करता है जो उसके स्वभाव में है। अपने स्वभाव के विरुद्ध वह कुछ नहीं करता और उसका स्वभाव अवतार लेने का नहीं है।

प्रश्न-ईश्वर का स्वभाव लेने का क्यों नहीं है ?

उत्तर-इसमें यह बातें सोचने की हैं कि कोई पदार्थ जब परिवर्तित होता है तो या तो वह अपनी पहली अवस्था से बेहतर होगा या कमतर होगा। तो ऐसे में-

अगर ईश्वर अवतार लेकर ही सम्पूर्ण हुआ, तो क्या यह सृष्टि की रचना करने वाला वह ईश्वर अवतार लेने से पहले सम्पूर्ण नहीं था ?

यदि वह ईश्वर अवतार लेने के बाद सम्पूर्णता से थोड़ा कम हुआ है तो फिर तो वह बिना अवतार लिए ही ठीक था। उससे ईश्वर का ही अपमान हुआ।

प्रश्न-हम मानते हैं कि लोगों में आदर्श स्थापित करने के लिए ही ईश्वर मनुष्य रूप में अवतार लेता है ताकि वह लोगों को शिक्षा दे सके तो क्या ये बात गलत है ?

उत्तर-वेदों में ऐसी कौन सी शिक्षा है जो ईश्वर ने पहले से नहीं दी ? जो उसे दोबारा शरीर लेकर संसार में आना पड़ा ? यदि ये कहो कि ईश्वर हमारे सामने ये आदर्श रखने आया कि एक मनुष्य कैसे वैदिक मर्यादाओं का पालन करे? तो फिर ये कोई बड़ी बात नहीं हुई क्योंकि ईश्वर अपने ही बनाए नियमों का पालन करे तो यह बड़ी बात है या कोई मनुष्य उन नियमों का पालन करके आदर्श स्थापित करके दिखाए तब बड़ी बात है?

उदाहरण लें कि कोई बाहरवीं की श्रेणी का विद्यार्थी, किसी दूसरी श्रेणी की पुस्तक का प्रश्न हल करे तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। परंतु यदि कोई आठवीं श्रेणी का विद्यार्थी यदि बाहरवीं की पुस्तक का प्रश्न हल करे तो बहुत बड़ी बात है।

ठीक ऐसे ही वेदों की मर्यादाओं का पालन यदि कोई मनुष्य ही करे तो वही सबके लिए आदर्श होगा न कि ईश्वर के मनुष्य शरीर में आने पर।

प्रश्न-तो क्या अयोध्या पति श्रीराम और देवकीनन्दन श्रीकृष्ण जी ईश्वर का अवतार नहीं है ?

उत्तर-नहीं ये मनुष्य ही थे और अपने वैदिक कर्त्तव्यों का पालन करने के कारण ये महामानव बने, ऋषि बुद्धि के हुए। पर वे कभी भी ईश्वर का अवतार नहीं थे।

प्रश्न-श्रीकृष्ण जी ने गीता में कहा है "यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत: अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्..." जिसमें वो कहते हैं कि जब जब धर्म की हानि होगी वो धर्म और साधुओं का उद्धार करने के लिए बार-बार अवतार लेंगे, तो आप इसे कैसे झुठला सकते हो ?

उत्तर-प्रथम तो अगर आपकी संस्कृत अच्छी है तो ये बताएं कि इस पूरे श्लोक में कहीं भी अवतार शब्द आया ? यदि नहीं तो फिर अवतार होना कैसे सिद्ध हुआ?

और दूसरी बात इस लोक में भारत लिखा हुआ है। यदि ये मानें कि भारत में वो अवतार लेते रहेंगे तो क्या बाकी दुनिया अरब, ईराक, ईरान, फ्रांस, टर्की, जर्मनी, अमरीका आदि में धर्म की हानि नहीं होगी?? तो ये तो साफ श्लोक का अर्थ करने वाले की मूर्खता है, एक और भारत को पुण्य भूमि बोलता है और दूसरी ओर बोलता है कि यहां पाप बढ़ता है जिस कारण ईश्वर को बार-बार अवतार लेना पड़ता है। इससे यह भारत पुण्य भूमि की बजाए पाप भूमि सिद्ध हुआ जहां बार-बार ईश्वर को अवतार लेना पड़ता है। पुण्य भूमि तो बाकी की दुनिया को बोलना पड़ेगा जहां ईश्वर को अवतार नहीं लेना पड़ रहा।

तीसरी बात ये है कि इसी श्लोक को आधार बना कर पाखंडी लोग अपने आप को ईश्वर या कृष्ण, विष्णु आदि का अवातर सिद्ध करते हुए दिखाई देते हैं और लोगों में पैसे ऐंठते रहते हैं और मूर्ख लोग भेड़चाल की भांति एक दूसरे के पीछे इन नए-नए भगवानों को सिर पर चढ़ा लेते हैं।

चौथी मज़े की बात ये है कि ये नए भगवान केवल कृष्ण के अवतार ही बन बैठते हैं और उनकी भांति रासलीला रचाने का ढोंग करके (स्त्रियों का मेला) अपने आश्रमों में लगाते हैं। लेकिन अजीब बात तो यह है कि कोई पाखंडी राम या हनुमान जी का अवतार बनने की सोचता भी नहीं क्योंकि राम या हनुमान बन कर तो ब्रह्मचर्य की मर्यादा का पालन करना पड़ेगा और उस स्थिति में ये पंडे स्त्रियों का आनन्द कैसे ले पाएंगे ?

प्रश्न-तो क्या भगवान विष्णु के जो दस अवतार कहे गए हैं, क्या वो झूठ हैं ?

उत्तर-अगर आपके गणित को माने तो सत्युग में पाप नहीं होता, तो त्रेता, द्वापर और कलियुग आते-आते पाप बढ़ता जाता है। लेकिन आपके अवतार क्यों कम होते जाते हैं ?

सत्युग में मोहिनी, मत्सय, कुर्म, वराह अवतार हुए हैं।

त्रेतायुग में वामन, राम, परशुराम।

द्वापरयुग में कृष्ण, कपिल, वशिष्ठ।

कलियुग में बुद्ध और कल्कि।

होना तो यह चाहिए था कि कलियुग आते-आते यह अवतार बढ़ने चाहिए थे। पर यहां पौराणिकों की उल्टी गंगा कैसे बह रही है भाई ये तो सरासर ही मूर्खता है।

प्रश्न-पर अवतारवाद का तो स्पष्ट वर्णन वेदों में है, तो आप क्यों नहीं मानते ?

उत्तर-वेदों में ईश्वर के कई नाम हैं, जिनके आधार पर ही संसार में लोगों के नाम रखे जाते रहे हैं, ना कि वेदों में अवतार का वर्णन है। जैसे किसी का नाम विष्णु है तो ये विष्णु नाम वेदों से लिया गया है, जो निराकार परमेश्वर सर्व सुन्दर विशेषणों से युक्त है उसे ही विष्णु कहा जाता है। इसका अर्थ ये नहीं कि वो विष्णु नामक व्यक्ति वेदों का विष्णु भगवान है, किसी का नाम ओम् प्रकाश है तो ये नहीं कि ये व्यक्ति वेदों में कहे गए ओम् का अवतार है। अपनी बुद्धि को खोलिए।

प्रश्न-आपके तर्क ठीक हो सकते हैं, परन्तु हम यह मानते हैं कि ईश्वर हमारी रक्षा करने के लिए शरीर रूप में आता है, यदि हम उसे प्रेम से भक्ति भाव से पुकारे तो ?

उत्तर-यदि ऐसी बात है तो भारत पिछले 1000 वर्ष तक विदेशियों का गुलाम रहा है जिसमें असंख्य अत्याचार प्रजा पर हुए हैं। जैसे मुसलमान शासक के काल में-

गर्भवती स्त्रियों के पेट फाड़ डाले जाते थे।

मुसलमान सैनिक सुंदर लड़कियों को उठा ले जाते थे और ग़जनी के बाज़ार में बेच देते थे।

हिन्दुओं के मुंह पर थूक दिया जाता था।

पाकिस्तान बनते समय हिन्दू सिक्खों के बच्चों को पका-पका कर खाया गया, उनकी स्त्रियों से सामूहिक बलात्कार हुए उनके स्तन काटे गए।

तो ऐसे असंख्य अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए ईश्वर ने अवतार क्यों नहीं लिया ? कहां थे आपके चतुर्भुज विष्णु? तो जब विदेशी आपके बहु-बेटियों, माताओं, बहनों की और आपके देश, आपकी संस्कृति की अस्मत लूटते रहे तब आप राम-राम, कृष्ण-कृष्ण की तोता रट लगाते रहे और ये आशा करते रहे कि कोई कल्कि कोई कृष्ण आपकी रक्षा के लिए आएगा। ये आपकी नपुंसकता नहीं तो क्या है ?

(शेष पृष्ठ 6 पर)

यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जोधपुर न जाते ?

-ले० मनमोहन कुमार आर्य 196 चुक्खूवाला देहरादून

महर्षि दयानन्द मई 1883 में अन्त में शाहपुरा से जोधपुर गए थे। वहां आने के लिए उनको जोधपुर रियासत की ओर से निमन्त्रण मिला था। स्वामी जी को शाहपुराधीश श्री नाहर सिंह जी ने जोधपुर आने से पूर्व वहां जाते समय संकेत करते हुए कहा था कि यह अच्छा होगा यदि वह जोधपुर में तीव्र भाषा में वेश्याओं को रखने की भर्तस्ना न करें। स्वामी जी तो सत्य कथन के लिए सर्वथा तत्पर रहते थे तथा तलवार की तीक्ष्ण धार से काटे जाने तथा तोप के मुख से बांध कर उड़ाए जाने की धमकी पाकर भी अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे। आपने यथापूर्व इस चेतावनी को भी अनसुना करते हुए शाहपुराधीश को कहा कि वे बड़े-बड़े वृक्षों को नुहारने से काटने में विश्वास रखने वाले नहीं हैं। इनको काटने के लिए तो अति तीक्ष्ण हथियार चाहिए। जोधपुर के लिए प्रस्थान कर चुके स्वामी जी के शाहपुर से अजमेर आने पर वहां भी उनके अनुयायी आर्य पुरुषों ने उनको जोधपुर के वातावरण का संकेत कर किसी अप्रिय घटना की आशंका व्यक्त की थी परन्तु महर्षि जोधपुर जाने के अपने निर्णय पर अडिग थे। इस संबंध में आर्य समाज के इतिहास के मर्मज्ञ प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखा है कि अजमेर के इस स्वल्प समय के प्रवास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना यही रही कि अजमेर के भक्तों को जोधपुर में ऋषि के अनिष्ट की आशंका थी। उन्हें भी महाराज पर नन्हीं भगतन के प्रभाव का पता था। उन्होंने मारवाड़ को 'राक्षस देश' की संज्ञा दी। स्वामी दयानन्द जी जोधपुर जाकर सधर्म का प्रचार करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे भले ही उनकी अंगुलियों को मोमबत्तियां बना कर जला दिया जावे। वे प्राणोत्सर्ग करने से पीछे हटने वाले नहीं थे। महर्षि जोधपुर पहुंचे और वहां जाने का जो परिणाम हुआ उससे हम सब व समस्त संसार परिचित है। महर्षि ने जोधपुर जाकर वहां अन्य स्थानों की भांति प्रवचन आदि से मिथ्या ज्ञान व अन्धविश्वासों पर चोट की। वहां के राज्याधिकारियों से उनकी भेंट भी हुई। महर्षि ने उनको सन्मार्ग दर्शन कराया।

महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं का महाराजा जसवन्त सिंह पर कोई प्रभाव पड़ा इसका तो कोई उदाहरण नहीं मिलता। हां, वहां महाराजा की चहेती वैश्या नन्ही भगतन स्वामी जी की शत्रु बन गई। जोधपुर रियासत के प्रधानमन्त्री मियां फैजुल्ला खां भी महर्षि दयानन्द के प्रवचनों में इस्लाम मत की समीक्षा से व्यग्र थे। महर्षि के उपचार में वहां के सरकारी चिकित्सक डा. अलीमर्दान ने जो त्रुटियां कीं, वह भी उनके स्वस्थ न होने का एक कारण प्रतीत होता है। महर्षि दयानन्द को जोधपुर में कोई अच्छा शिष्य भी प्राप्त नहीं हुआ जैसा कि उदयपुर, शाहपुर व अन्य रियासतों में प्राप्त हुए थे। राज परिवारों से जुड़ लोगों में उनके छद्म शिष्य ही दिखाई पड़ते हैं। इनकी व्यवस्था की चूक का परिणाम ही तो विषपान की घटना थी। क्या जोधपुर के महाराजा की अपनी कोई गुप्तचर व्यवस्था नहीं थी? यदि थी तो क्या उसने महाराजा को इस सम्भावित घटना की कोई सूचना दी थी या नहीं? ऐसे अनेक प्रश्न भी मन में उठते हैं। इस कारण यह कहा जा सकता है कि महर्षि के जोधपुर जाने से महर्षि दयानन्द व आर्य समाज को लाभ तो कुछ नहीं हुआ परन्तु हानि ऐसी हुई कि जो वज्रपात के समान व उससे भी अधिक कही जा सकती है। यह हानि न केवल आर्य समाज की थी अपितु यह विश्व के मानव मात्र की सबसे बड़ी हानि थी क्योंकि वह सबसे बड़े धन ज्ञान व विद्या से वंचित हुआ था। इस लेख में हम इस प्रश्न पर विचार कर रहे हैं कि यदि महर्षि जोधपुर न जाते तो क्या स्थिति महर्षि का जोधपुर जाना उनके, आर्य समाज, वैदिक धर्म व संस्कृति के लिए घोर विपत्तिकारी सिद्ध हुआ। यदि वह वहां न जाते तो अधिक समय तक जीवित रहते और वैदिक धर्म का प्रचार करते। उनको पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला हंसराज, लाला लाजपत राय, लाला साईं दास, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित धर्मदत्त जिज्ञासु, पंडित युधिष्ठिर मीमांसक, महाराजा सज्जन सिंह, महाराजा नाहर सिंह जी आदि जैसे अनेक शिष्य मिलते। विधर्मियों से वह और अधिक शास्त्रार्थ करते। सत्य धर्म सम्बन्धी और अधिक साहित्य, सामग्री तक व प्रमाण हमें प्राप्त होते तथा वह देश भर में घूम-घूम कर प्रवचनादि देते और प्रचार करते। लाखों लोग उनके प्रवचन सुनकर उनके अनुयायी बन सकते थे। उनसे इन सब लाभों के साथ अन्य अनेक नए मौलिक स्थाई ग्रन्थ मिल सकते थे जिससे कि संसार से अज्ञान दूर करने में सहायता मिलती। इन ग्रन्थों के साथ यह आशा कर सकते हैं कि वह ऋग्वेद का भाष्य अवश्य पूरा करते। उसके बाद सामवेद का भाष्य भी कुछ दिनों में पूरा कर लेते और इसके बाद अथर्ववेद का भाष्य भी आरम्भ कर उसे सम्पन्न करते। यह सब कार्य उनके जोधपुर जाने, वहां षडयन्त्र होने, उनको विष दिए जाने, उपचार में लापरवाही होने व बाद में उनके दिवंगत हो जाने के कारण काल के गाल में समा यदि महर्षि दयानन्द जोधपुर न जाते तो यह स्वभाविक था कि वह 29 सितम्बर, 1883 की रात्रि जोधपुर में दूध के साथ विष दिए जाने के बाद जितनी अवधि तक जीवित रहते उसके अनुपात में ही कार्य करते। मृत्यु के समय स्वामी जी की आयु लगभग 58 वर्ष 9 माह थी। अत: यह सम्भव था कि यदि वह सामान्य जीवन व्यतीत करते तो न्यूनतम 80-85 वर्ष तक तो सक्रिय जीवन व्यतीत कर ही सकते थे। इससे अधिक 100 वर्ष व कुछ अधिक वर्ष भी जीवित रह सकते थे। अत: उन्हें 21 से 26 वर्ष तक का समय तो और मिलता ही। उन्होंने जो कार्य किया उसे यदि सन् 1863 जबकि वह गुरू विरजानन्द सरस्वती जी से विद्या समाप्त कर कार्यक्षेत्र में उतरे थे, आरम्भ करें तो सन् 1883 तक उन्होंने लगभग 20 वर्ष कार्य किया। इस प्रकार वह 21 से 26 वर्ष और कार्य करते तो यह उनसे इससे पूर्व किए कार्य का कई गुणा होता क्योंकि उन्होंने 1863 में जब कार्य आरम्भ किया तो वह समाज व देश के लिए अनजान थे और मृत्यु के समय उनके लाखों अनुयायी बन चुके थे। इस अवधि में उनके सामने ही वेद भाष्य का कार्य पूरा हो कर प्रकाशित हो सकता था। सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित संस्करण भी उनके सामने ही प्रकाशित हो जाता। अन्य वह कौन-कौन से ग्रन्थ लिखते यह कहा नहीं जा सकता। हो सकता है कि ब्राह्मण ग्रन्थों, दर्शनों व उपनिषदों पर भी कोई टीका व समीक्षात्मक ग्रन्थ तैयार करते। मनुस्मृति में अनेक श्लोक हैं जो महाभारत काल के बाद के लोगों द्वारा प्रक्षिप्त किए गए हैं, उनके संशोधन व अनुसंधान का कार्य भी स्वयं या अपने कुछ योग्य शिष्यों के माध्यम से हाथ में ले सकते थे। यद्यपि यह कार्य महर्षि भक्त महात्मा लाला दीपचन्द आर्य जी ने कराया है परन्तु यदि यह कार्य महर्षि दयानन्द के समय में होता तो अति उत्तम होता। उनके द्वारा तैयार विशुद्ध मनुस्मृति अधिक महत्त्वपूर्ण होती। इस दृष्टि से महात्मा दीपचन्द आर्य जी भी आर्य जगत की कृतज्ञता के पात्र हैं।

हम यह भी अनुभव करते हैं कि स्वामी जी बाद के जीवन में प्रो. मैक्समूलर सहित सभी विदेशी संस्कृतज्ञ वैदिक विद्वानों से सम्पर्क बढ़ाते और उन्हें अच्छी तरह से वैदिक विचारधारा से प्रभावित करते। वह उन्हें भारत आने के लिए भी आमंत्रित कर सकते थे। यह भी हो सकता था कि स्वामी जी इंग्लैंड व जर्मनी आदि की यात्रा करते। वहां दूभाषिये ले जाते और वेदों का जम कर प्रचार करते। हम यह जो अनुमान कर रहे हैं कि यह कोई अतिश्योक्तिपूर्ण अनुमान नहीं है। यह सामान्य अनुमान है जो कि सम्भवकोटि के हैं। उनके भारत में वेदभाष्य पूर्ण कर देने, उनका प्रकाशन हो जाने, अन्य-अन्य नए ग्रन्थों के प्रकाश में आने, बड़ी संख्या में आर्य समाजों की स्थापना और वैदिक धर्मी के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि से उनका कृण्वन्तो विश्वमार्यम का लक्ष्य सन् अक्तूबर 1883 व उनके बाद की स्थिति की तुलना में कहीं अधिक निकट आ सकता था। यदि महर्षि दयानन्द मई 1883 में जोधपुर न जाते तो यह देश व संसार के लिए अत्यन्त कल्याणकारी होता और इससे मनुष्यों को सत्यधर्म के निर्णय करने व उस पर आचरण करने की पूर्वापेक्षा अधिक सहायता मिली व लाभ होता।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

शोक सभा

मास्टर सुदेश कुमार जी शर्मा मंत्री आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर की पूज्य माता श्रीमती मायावती जी शर्मा का गत दिनों देहावसान हो गया। उनका अंत्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति अनुसार पंडित सुभाष जी ने करवाया जिसमें आर्य समाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। पूज्य माता जी ने अध्यापन के क्षेत्र में बहुत नाम कमाया। वह धार्मिक एवं सात्विक विचारों से ओत प्रोत थी। उनकी रस्म किरया 2 जून 2015 को एक बजे से दो बजे तक गुरुद्वारा सिंह सभा बस्ती नौ नजदीक बर्फ कारखाना जालन्धर में होगी।

-विपिन शर्मा आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर

शोक समाचार

महर्षि दयानन्द मठ चम्बा के आचार्य श्री महावीर सिंह जी के सुपुत्र श्री ऋषि कुमार आर्य जी का 35 वर्ष की अल्पायु में दिनांक 23-05-2015 को लुधियाना के डी.एम. सी. में हृदयगति के रूक जाने से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 24-05-2015 को सायं 4 बजे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती द्वारा स्थापित महर्षि दयानन्द मठ चम्बा को उनके शिष्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती जी ने बुलन्दियों के शिखर पर पहुंचाया। स्वामी सुमेधानन्द जी ने महर्षि दयानन्द मठ चम्बा में ऐतिहासिक अभूतपूर्व यज्ञों का आयोजन किया। उनके इस कार्य को आगे बढ़ाने में आचार्य श्री महावीर सिंह जी के परिवार का बहुत योगदान रहा। आचार्य जी का सारा परिवार पूर्ण रूपेण मठ के प्रति समर्पित है। आचार्य जी की कर्मठता और स्वामी जी के मार्गदर्शन में मठ ने बहुत उन्नति की। उनके इसी कार्य को आचार्य श्री महावीर जी के सुपुत्र श्री ऋषि कुमार जी आर्य आगे बढ़ा रहे थे। शास्त्री, आचार्य और संस्कृत में एम. ए. करने के पश्चात उन्होंने अपना जीवन पूर्ण रूप से मठ को समर्पित किया हुआ था। महर्षि दयानन्द मठ के उपाचार्य पद पर कार्य करते हुए वे महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय के चेयरमैन के रूप में विद्यालय की उन्नति में अपना योगदान दे रहे थे। उनके योगदान से महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में चम्बा में खूब उन्नति कर रहा है। उनके इस असामयिक निधन से महर्षि दयानन्द मठ के साथ-साथ समस्त आर्य जगत की अत्यधिक क्षति हुई है। उनके निधन से आर्य जगत ने एक युवा विद्वान खो दिया है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे व मठ परिवार को जो असहनीय एवं अकस्मात दुःख प्राप्त हुआ है उसे सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करे। दुःख की इस घड़ी में हम सभी शोक संतप्त परिवार के साथ है।

प्रवेशार्थ सूचना

गंगा किनारे शान्त प्रकृति के वातावरण में स्थित गुरुकुल पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। सं. वि. वि. वाराणसी से शास्त्री आचार्य तक मान्यता प्राप्त एवं उ.प्र. मा.शि. परिषद लखनऊ से मध्यमा (12) तक मान्यता प्राप्त तथा सुन्दर दिनचर्या धनुर्विद्या का विशेष प्रशिक्षण अनिवार्य रूप में प्रदान किया जाता है। प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा की भी सुन्दर व्यवस्था है। अपने बच्चों को देश भक्त गुरु भक्त, मातृ-पितृ भक्त बनाने के लिए आज ही सकल्प लेकर शीघ्र सम्पर्क करें। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज की साधना स्थली पर आपका हार्दिक स्वागत है।

-दिनेश आचार्य

पृष्ठ 4 का शेष-अवतारवाद.....

प्रश्न-अवतारवाद के मानने से क्या हानि है ?

उत्तर-अवतारवाद के मानने से-

1. पुरुषार्थ छोड़ मनुष्य भाग्यवादी हो जाता है। वो सोचता है कि मेरी रक्षा आकर कोई अवतार ही करेगा।

2. समाज अनेकों ईश्वरों में बंट जाता है जिससे कि राष्ट्र कमज़ोर हो जाता है।

3. अनेकों पाखंड चलने लगते हैं। कई मनुष्य भगवान के अवतार बनकर जनता को ठगते हैं और उनका शोषण करते हैं और लोगों को अवतार के भरोसे बैठ कर नपुंसक बनाते रहते हैं।

4. निर्बल हुए धर्म समाज पर अनेकों विदेशी ईसाई और मुसलमान मत परिवर्तन का गंदा खेल खेलते हैं।

5. अनेकों मत होने से देश टूटने लगता है।

प्रश्न-ईश्वर अवतार लेकर धरती पर दुष्टों का विनाश करने आते हैं ?

उत्तर-ईश्वर सर्वव्यापक है व एकदेशी। उत्तर होगा सर्वव्यापक। अब आया-जाया तो तब जाता है जब कोई एकदेशी हो। उदाहरण के लिए मैं एकदेशी हूं और मुझे ब्राज़ील देखना है तो मुझे वहां जाकर ही देखना होगा। लेकिन यदि मैं सर्वव्यापक होता तो मुझे कहीं जाने की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि आया-जाया तो वहां जाता है जहां हम हों न। ईश्वर सब जगह है तो उसे आने-जाने की क्या ज़रूरत ? रही बात दुष्टों के संहार की बात। ईश्वर आपके अन्दर है। अब ईश्वर को यदि दुष्टों को मारना है तो वो उन दुष्टों की दिल की धड़कने, सांस आदि रोक कर भी मार सकता है, अवतार की क्या ज़रूरत??

पृष्ठ 5 का शेष-यदि महर्षि दयानन्द.....

महर्षि दयानन्द को विष देने में नन्हीं भगतन व उनके रसोईये धौड़ मिश्र (जगन्नाथ) सहित अनेक षडयन्त्रकारियों के नाम हो सकते हैं जिन पर पड़ा पर्दा नहीं उठ सका। हम यह भी समझ पाने में असमर्थ हैं कि जोधपुर के राज परिवार ने नन्हीं भगतन व वहां के अन्य सम्भावित लोगों के महर्षि के विषपान में लिप्तता की जांच क्यों नहीं की और यह क्यों नहीं बताया कि उन्होंने क्या प्रयास किए और उसके क्या परिणाम निकले। यह भी सन्देह पैदा करता है ? महर्षि के शिष्य शाहपुराधीश महाराजा नाहर सिंह जी द्वारा महर्षि के रसोईये जो उनके राज्य का ही नागरिक था, उसे बन्दी बना कर पूछताछ व जांच क्यों नहीं कराई गई? क्या इसमें भी कहीं कोई रहस्य तो नहीं छिपा है? महर्षि दयानन्द के बारे में सरकारी खुफिया रिर्पोटों में क्या कुछ जानकारियां सरकार को दी गई थी और सरकार ने उस पर क्या निर्णय व कार्यवाही की थी, यह सब भी रहस्य है। अब सामने आ भी नहीं सकता। अत: जो भी हो, महर्षि दयानन्द का जोधपुर जाना, वहां प्रचार करना, राजाओं के चारित्रिक दोषों की आलोचना करना, वैश्याओं व रखैलों की आलोचना सहित पौराणिक व अन्य मतों के मिथ्या [illegible] व अन्धविश्वासों की आलोचना करना उनकी मृत्यु का कारण बने थे। सभी पक्षों पर विचार करने और तरह-तरह के विचार सामने आने पर भी यही कहना होगा कि शायद नियति को यही स्वीकार था।

महर्षि को [illegible] जाना था, इसी से उनकी मृत्यु होनी थी जो कि 30 अक्तूबर, सन् 1883 को अजमेर में हुई। यह [illegible] पर भी मन यही कहता है कि काश महर्षि दयानन्द जोधपुर के निमंत्रण को [illegible] देते और वहां न जाते तो इससे देश व संसार का कितना अधिक हित होता। ईश्वर करे कि यह देश को एक बार फिर एक दयानन्द और दे जिससे विश्व में मत मतान्तरों का अन्धकार दूर होकर सत्य वैदिक मत का चहुदिश सर्वत्र आकाश व पाताल।

श्रीमती चांद रानी भल्ला जी नहीं रहीं

लुधियाना के प्रतिष्ठित आर्य समाजी स्वर्गीय श्री नरेन्द्र भल्ला जी की धर्मपत्नी श्रीमती चांद रानी भल्ला जी का 16 मई 2015 को निधन हो गया। श्रीमती चांद रानी जी भल्ला धार्मिक विचारों की महिला थीं और यज्ञ में उनकी अगाध श्रद्धा थी। स्वर्गीय श्री नरेन्द्र भल्ला जी ने आर्य समाज पार्क लेन लुधियाना के माध्यम से लुधियाना में घर-घर में पारिवारिक सत्संग की जो कड़ी चलाई थी उसमें श्रीमती भल्ला ने अपने पति का बहुत सहयोग किया तथा स्वर्गीय श्री नरेन्द्र भल्ला जी के जाने के बाद इन पारिवारिक सत्संगों को चलाए रखने में श्रीमती भल्ला ने पूर्ण सहयोग दिया। उनके निधन के बाद परिवार के साथ-साथ आर्य समाज की भी अपूरणीय क्षति हुई है। आर्य प्रतिनिध सभा पंजाब उनके दोनों सुपुत्रों श्री अशो भल्ला और श्री अनिल भल्ला के साथ इस दुख की घड़ी में साथ हैं और उनसे सांत्वना प्रकट करती है। उम्मीद है कि श्री अशोक भल्ला जी और श्री अनिल भल्ला जी अपने माता-पिता द्वारा चलाए इन सत्संगों की कड़ी को बनाए रखेंगें और आर्य समाज को पूरा सहयोग देंगे। 19 मई 2015 को शहनशाह पैलेस में प्रार्थना सभा हुई जिसमें लुधियाना ज़िला की सभी आर्य समाजों, वेद प्रचार मंडल, पुरोहित सभा के सदस्यों के साथ-साथ नगर के गणमान्य व्यक्तियों ने भारी संख्या में सम्मिलित होकर पूज्य माता जी को श्रद्धा सुमन भेंट किए। भारत के प्रसिद्ध भजन गायक अनूप जलोटा ने भजनों के माध्यम से पूज्य माता जी को भावभीनीं श्रद्धांजलि अर्पित की। पंडित सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने माता जी के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें प्यार व ममता की मूर्ति बताया। वह धार्मिक व सामाजिक सेवा के कार्य करने में हमेशा तत्पर रहती थीं।

बैंक कालोनी, ग्वालियर में पंच दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज नया बाज़ार के पूर्व प्रधान डॉ. आनंद मोहन सक्सेना (नेत्र विशेषज्ञ) जी के सेवानिवृत होने पर ही किसी एक वेद से यज्ञ करने का संकल्प था। ईश्वर की कृपा से दीर्घकाल के उपरांत 30 अप्रैल से 4 मई 2015 तक पंच दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। मुख्य यजमान डा. सक्सेना जी व उनके छोटे भाई डा. विजय मोहन जी थे व प्रतिदिन अन्य लोगों को भी आहुतियां देने का अवसर मिलता था। प्रत्येक अध्याय के उपरांत यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी मंत्रों की सांकेतिक व्याख्या करते थे। वेद पाठी का दायित्व गुरुकुल की दो स्नातिकाएं कु. मनीषा (बिजनौर) व कु. मीनाक्षी (होशंगाबाद) निभाती थी। यजुर्वेद के मंत्रों का तीव्र गति में शुद्ध उच्चारण सुन व देख कर आर्यजनों की प्रसन्नता का पारावार न रहा। वैसे तो एटा (उत्तरप्रदेश) के पंडित शिवपाल आर्य जी के मधुर भजनोपदेश का लाभ सबको मिलता ही था परन्तु ब्रह्मचारिणी मनीषा जी ने भी प्रतिदिन भजन व उपदेश सुनाए। स्थानीय विद्वान डा. दिवाकर विद्यालंकार जी का भी एक रात्रि सत्र में उपदेश हुआ था। बैंक कालोनी में सक्सेना जी की कोठी के सामने ही शिव मंदिर के प्रांगण के पंडाल में प्रात: सायं दो सत्रों में कार्यक्रम होता था। इसके पूर्व भागवत कथा आदि के सत्संग तो कालोनी में हुए थे पर वेदोपदेश प्रथम बार ही हुआ। विशेष रूप से रात्रि के प्रत्येक सत्र में आर्य समाजेतर महानुभावों की उपस्थिति बड़ी संख्या में होती थी। उनमें वैदिक सिद्धान्तों के बारे में स्पष्टीकरण आचार्य श्री अपने उपदेश में करते थे। जिसका काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ा। ग्वालियर के सभी आर्य समाजों से अधिकारी व सदस्य लोग आते रहे। अंतिम दिन रात्रि में ऋषि लंगर का कार्यक्रम था जिसमें लगभग 600 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। डॉ. आनंद मोहन जी की 65वीं वर्षगांठ पर यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तो उनके पुत्र डॉ. अशीष सक्सेना के विवाह की वर्षगांठ का सुअवसर इस यज्ञ में संयोग वशात प्राप्त हुआ। डा. साहब ने कहा कि इस बार मैंने व्यक्तिगत प्रयत्न से पारायण यज्ञ करने का यत्न किया है पर आगे आप सभी यदि यथोचित सहयोग दें तो इसे और भी बृहत स्तर पर आयोजित किया जा सकता है। उनके दूर-दूर से आए हुए सम्बन्धियों ने इसे स्वीकार किया। अंत में डा. साहब ने सभी का धन्यवाद किया।

शत् शत नमन

स्व० महात्मा चैतन्यमुनि, महात्मा सुन्दर नगर

ऋषिवर के चरणों में शत् शत् नमन्।
गुरुवर के चरणों में शत् शत् नमन्।।

धर्म के मर्म को सब भुलाए हुए थे,
पाखण्ड और आडम्बर छाए हुए थे।
विषयों के कोड़ों से सताए हुए थे,
अमरत्व डगर को बिसराए हुए थे।

सत्यार्थ देकर सब संशोधित किया।
ऋषिवर के चरणों....गुरुवर के चरणों....

वो अकेले ही जग में विचरते रहे,
विष पीकर भी अमृत देते रहे।
भंवर में थी देश व जाति की नाव,
वो अकेले ही नैया को खेते रहे।

भारत को सिरमौर घोषित किया।
ऋषिवर के चरणों....गुरुवर के चरणों....

महिला शूद्रों का घोर अपमान था,
वेद पढ़ें न सुनें ये फरमान था।
दीनहीन हो रही थी मनु की सन्तान,
हृदय में सभी के ज्यों श्मशान था।

ऐसे में जन-जन को पोषित किया।
ऋषिवर के चरणों....गुरुवर के चरणों....

योगी, तपस्वी, दया के सागर थे वो,
अध्यात्म की उजली चादर थे वो।
सिन्धु से गहरे आकाश से भी ऊंचे,
दिव्य ज्ञान 'चैतन्य' से उजागर थे वो।

ऐसे में जन-जन को पोषित किया।
ऋषिवर के चरणों....गुरुवर के चरणों....

वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार जी वेद रत्न से सम्मानित

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा. महेश विद्यालंकार जी को उनकी आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा सेवा पूर्वक तथा महर्षि दयानन्द की मान्यताओं के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए योगदान को स्मरण करते हुए 'अग्निहोत्री धमार्थ ट्रस्ट' ने स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के 'प्रेरणा दिवस' समारोह में 15 मई 2015 को 'आर्ष कन्या गुरुकुल' चोटी पुरा में स्मृति चिहन् एवं 11000/- रुपए की राशि सहित 'वेद रत्न पुरस्कार' से सम्मानित किया। आदरणीय डॉ. महेश विद्यालंकार जी द्वारा उपरोक्त राशि 'गुरुकुल चोटीपुरा को विनम्रतापूर्वक भेंट करने पर मंच पर उपस्थित विद्वत्गण तथा समारोह में उपस्थित आर्यजन समूह ने उल्लासपूर्वक करतल ध्वनि से उनकी उदारता का स्वागत किया। डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने समारोह में उपस्थित विद्वान् आगन्तुक महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त किया और ट्रस्ट के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के प्रेरणा दिवस पर उनके प्रेरक जीवनवृत्त पर प्रकाश डाला और स्वामी जी के जीवन दर्शन से सबको प्रेरणा लेने का आग्रह किया। 'आर्ष गुरुकुल चोटीपुरा' की आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने डॉ. महेश जी के जीवन एवं आर्य समाज के क्षेत्र में उनके योगदान की चर्चा करते हुए उनका धन्यवाद किया तथा विद्वत् मण्डल और आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

-पंडित प्रद्युम्न शास्त्री

यज्ञमय जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन हैः अरविन्द घई

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें पुरुष यजमान अरविन्द घई और रश्मि घई ने पवित्र वेद मंत्रों से आहुतियां प्रदान की। पंडित शिवा जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। आर्य समाज की भजन गायिका सोनू व भारती ने एक भजन उमरिया बीती जाए रे भजन गाकर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज में पधारे मुख्य अतिथि अरविन्द घई को सम्मानित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री रणजीत आर्य ने बताया कि आज आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह द्वारा अरविन्द घई जी को सम्मानित किया गया। हमें बहुत ही गर्व है कि अरविन्द घई जी को डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी भारत का सचिव नियुक्त किया गया है। आर्य जगत में जालन्धर का मान बढ़ाया है। अरविन्द घई आर्य समाज माडल टाऊन के प्रधान हैं। मुख्य अतिथि घई जी ने कहा कि आज जो मुझे सम्मान प्राप्त हुआ है वह सब आर्य समाज के कारण प्राप्त हुआ है। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि यज्ञमय जीवन ही सर्वश्रेष्ठ जीवन है। इससे प्राणियों को शान्ति प्राप्त होती है। इसके उपरान्त आर्य समाज की सुप्रसिद्ध भजन गायिका रश्मि घई ने भजन गाकर सब को निहाल कर दिया। इसके उपरान्त पंडित शिवा शास्त्री ने कहा कि बच्चों को चरित्रवान बनाना प्रत्येक मां-बाप का धर्म है। इस अवसर पर पधारे ईश्वर चन्द्र रामपाल, अनु आर्या, जतिन्द्र आर्य, चौ. हरिचन्द्र, प्रेम नाथ, मीनू, अनीता मीतू, हर्ष लखनपाल, रमेश मुटरेजा, सुदर्शन आर्य, शिखा आर्या, राजेश वर्मा, राजीव कुन्दरा, राजीव शर्मा, विनोद तिवारी, ललित कालिया, सुनील मल्होत्रा, बैजनाथ, कुबेर शर्मा, नन्दिनी शर्मा, स्वर्ण शर्मा, हरिविन्द्र सिंह बेदी, सुनैना शर्मा, संगीता तिवारी, रैना शर्मा, संगीता मल्होत्रा, किरण शर्मा, प्रभा विज, राजेन्द्र विज, दीपक अग्रवाल, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, पवन शर्मा, आशू मितू, प्रो.जसविन्द्र गोरा, अनीता अग्रवाल, तिलक राज, अश्विनी डोगरा, अनिल मिश्रा, मोहन लाल, गौरव आर्य, दिव्या आर्या, सृष्टि आर्या, सरिता आर्या, मनु आर्य, प्रियांजलि आदि समस्त इलाका निवासी ने प्रचार कर यज्ञ की शोभा बढ़ाई।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर की यज्ञशाला में हवन में आहुतियां प्रदान करते हुये अरविन्द घई और रश्मि घई।

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।